नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पढ़ाएं इतिहास

भारत में इतिहास के पाठ्यक्रम को लेकर हमेशा से बहस चलती रही है, खासकर जब बात एनसीईआरटी की किताबों की आती है. हाल ही में इन किताबों में हुए बदलावों ने एक बार फिर इस बहस को तेज़ कर दिया है. इन बदलावों पर 'शिक्षा के भगवाकरण' का आरोप लग रहा है, लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि यह सिर्फ़ एक आरोप से ज़्यादा, इतिहास-लेखन की अपनी जटिलताओं से जुड़ा मामला है.

लंबे समय से यह तर्क दिया जाता रहा है कि भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम में वामपंथी इतिहासकारों का वर्चस्व रहा है. इन इतिहासकारों पर अक्सर यह आरोप लगता है कि उन्होंने भारतीय इतिहास को एक विशेष चश्मे से देखा, जिसमें मुगल शासकों का महिमामंडन किया गया और भारतीय उपमहाद्वीप के स्थानीय राजाओं और साम्राज्यों की भूमिका को कम आंका गया. आलोचकों का मानना है कि इस दृष्टिकोण ने एक पक्षपातपूर्ण कथा को जन्म दिया, जहां कुछ ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तित्वों को जानबूझकर हाशिए पर रखा गया या उनकी नकारात्मकता को कम करके आंका गया. उदाहरण के लिए, मुगल काल में हुए संघर्षों, धार्मिक उत्पीड़न, और अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभावों को अक्सर या तो नज़रअंदाज़ कर दिया गया या उन्हें बहुत ही सामान्य रूप में प्रस्तुत किया गया. इससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार हुई जो अपने ही इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं से अनजान रही. उदाहरण देना हो तो मराठा शासक छत्रपति संभाजी महाराज का दिया जा सकता है, जिनके बारे में उत्तर भारत में किसी को अधिक जानकारी नहीं थी.

बहरहाल, यह सच है कि इतिहास कभी भी पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता, क्योंकि यह हमेशा व्याख्या पर आधारित होता है. लेकिन, शिक्षा के पाठ्यक्रम में, विशेष रूप से बच्चों के लिए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि प्रस्तुत की गई जानकारी यथासंभव संतुलित और तटस्थ हो. पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करना होना चाहिए, न कि उन्हें किसी विशेष विचारधारा का अनुयायी बनाना. जब इतिहास का पाठ्यक्रम सांप्रदायिक भेदभाव को बढ़ावा देता है, चाहे वह किसी भी पक्ष से हो, तो यह बच्चों के मन में विभाजनकारी विचार पैदा कर सकता है.

एनसीईआरटी के हालिया बदलाव, जहां मुगल शासकों के 'क्रूर' पहलुओं को उजागर किया गया है और भारतीय राजाओं की भूमिका को अधिक महत्व दिया गया है, इसे वामपंथी एकाधिकार को तोड़ने का एक प्रयास माने जा सकते हैं. हालांकि, यह सुनिश्चित करना भी उतना ही जरूरी है कि इन बदलावों से इतिहास का अति-सरलीकरण न हो और न ही यह एक राजनीतिक एजेंडे का हिस्सा बन जाए. इतिहास के हर कालखंड में अच्छे और बुरे दोनों पहलू होते हैं.

बच्चों का पाठ्यक्रम अत्यंत संवेदनशील मामला है. यह उन्हें न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उनकी विश्वदृष्टि और मूल्यों को भी आकार देता है. इसलिए, यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि इतिहास का पाठ्यक्रम तथ्यों पर आधारित हो, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दे, और बहुआयामी परिप्रेक्ष्य प्रदान करे .इसमें किसी भी प्रकार के सांप्रदायिक या राजनीतिक पूर्वाग्रह के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए. हमें एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाना चाहिए जो बच्चों को अपने अतीत से सीखने, विविध संस्कृतियों को समझने और एक समावेशी भविष्य का निर्माण करने के लिए प्रेरित करे.

75+ के फार्मूले का व्यवहारिक पक्ष भी देखें

कृष्णमोहन झा

संघ प्रमुख मोहन भागवत के एक भाषण की इन दिनों बहुत चर्चा हो रही है और उसके अलग अलग निहितार्थ निकाले जा रहे हैं. यह भाषण उन्होंने विगत दिनों संघ की दिवंगत विभूतियों में से एक स्व मोरोपंत पिंगले के व्यक्तित्व और कृतित्व की विशेषताओं को उजागर करने वाली पठनीय पुस्तक मोरोपंत पिंगले - द आर्किटेक्ट आफ हिंदू रिसर्जेंस के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से दिया था.

मोहन भागवत ने अपने भाषण में मोरोपंत पिंगले के 75 वें जन्मदिन पर आयोजित सम्मान समारोह में उनके द्वारा विनोद के लहजे में की गई एक टिप्पणी का उल्लेख किया. मोरोपंत पिंगले ने अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में दिए गए भाषण में कहा था कि जब आप किसी के 75 वें जन्मदिन पर शाल ओढ़ाकर उनका सम्मान करते हैं तो इसका मतलब होता है कि अब आप हट जाओ हमें करने दो. चूंकि संघ प्रमुख मोहन भागवत के बारे में यह आम धारणा बन चुकी है कि वे इशारों इशारों में ही अपना मंतव्य व्यक्त करते हैं इसलिए उनके इस भाषण ने भी यह बहस छेड़ दी है कि संघ प्रमुख ने मोरोपंत पिंगले की टिप्पणी का उल्लेख सहज होकर किया था या फिर उनका इशारा कहीं और था . संयोग से मोहन भागवत और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसी साल सितंबर में एक सप्ताह के अंतराल से 75 वर्ष के हो रहे हैं. इसलिए संघ प्रमुख के बयान के निहितार्थ निकाले जाने का सिलसिला थमता नजर नहीं आ रहा है.

मोहन भागवत ने अपने भाषण में यद्यपि मोरोपंत पिंगले की टिप्पणी का उल्लेख करके उनकी विनोद प्रियता का उदाहरण मात्र दिया था परन्तु विपक्ष तो जैसे इसी अवसर की तलाश कर रहा था. उसने मोहन भागवत के भाषण में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए नसीहत खोजने में कोई देर नहीं की जबकि उसमें ऐसा कोई भाव नहीं था. मैं समझता हूं कि मजाकिया लहजे में कही गई की बात को मजाक में ही लिया जाना चाहिए. चूंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 17 सितंबर को अपने यशस्वी जीवन के75 वर्ष पूर्ण करने जा रहे हैं इसलिए यह तो तय माना जाना चाहिये कि मोहन भागवत का उक्त भाषण पर छिड़ी बहस का सिलसिला निकट भविष्य में थमने वाला नहीं है बल्कि अगले कुछ दिनों में यह मसला और जोर जोर से उठाया जाएगा.

वैसे संघ प्रमुख मोहन भागवत खुद भी मोदी की 75 वीं वर्षगांठ के 6 दिन पूर्व 75 वर्ष के होने जा रहे हैं इसलिए यह कयास भी लगाए जा सकते हैं कि क्या संघ प्रमुख मोहन भागवत भी मोरोपंत पिंगले के मजाक को हकीकत में बदलने का मन तो नहीं बना रहे हैं लेकिन सवाल तो फिर वही उठता है कि क्या स्व मोरोपंत पिंगले द्वारा अपने 75 वीं वर्षगांठ के अवसर आयोजित सम्मान समारोह के प्रत्युत्तर में विनोद प्रियता के लहजे में कही गई बात को उसी रूप में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए.

मेरे विचार से तो राजनीति से सन्यास के लिए 75 साल की सीमा रेखा तय करने की बात सैद्धांतिक रूप से तो सही मानी जा सकती है परन्तु व्यवहारिक रूप से भी इसे सही ठहराना उचित नहीं होगा. अगर 75 पार के राजनेता अथवा संघ के पदाधिकारी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने में पूर्णत: सक्षम हैं तो निश्चित रूप से उनकी सेवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए. ऐसी तपस्वी,मनस्वी और अनुभवी विभूतियां चाहे सरकार अथवा किसी भी राजनीतिक दल में वरिष्ठ पदों पर आसीन हों उन्हें शाल ओढ़ाकर उनसे वानप्रस्थ आश्रम में जाकर विश्राम करने का अनुरोध करना उनकी अनमोल सेवाओं का उचित सम्मान नहीं माना जा सकता.

ऐसा मानना भी उचित नहीं होगा कि 75 साल की आयु सीमा पार कर चुके राजनेता अथवा संघ के पदाधिकारी अपने से किसी प्रतिभाशाली कनिष्ठ की उन्नति के मार्ग में अवरोध पैदा करने की मंशा रखते होंगे. भाजपा और संघ में युवा प्रतिभाओं का हमेशा सम्मान किया गया है और यह सिलसिला निरंतर जारी है अत: संघ प्रमुख मोहन भागवत ने स्व. मोरोपंत पिंगले से जुड़ी जिस घटना का उल्लेख विगत दिनों एक पुस्तक के विमोचन समारोह में किया है उसका उनकी विनोद प्रियता के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में मूल्यांकन किया जाना चाहिए.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

मध्य क्षेत्र की डायरी

अधिकारी की मनमानी

अशोक नगर के नगर परिषद के अध्यक्ष हैं परेशान

दिलीप झा

अशोक माहौर
अशोक नगर नप अध्यक्ष

अशोकनगर जिले में निरंकुश अधिकारियों और ठेकेदारों की मनमानी से बीजेपी कार्यकर्ता और नेता भी परेशान हैं. परेशान होकर गत दिनों नप अध्यक्ष द्वारा सुसाइड किए जाने की बात कही गई है. यह बात उन्होंने वीडियो संदेश जारी कर जनता से माफी मांगते हुए कही थी. जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल भी हुआ था. लेकिन इसके बाद भी समस्या का समाधान नहीं हो रहा है. दरअसल नप अध्यक्ष अशोक माहौर ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा था कि अधिकारी और ठेकेदार मनमानी पर उतारू हैं. वायरल हो रहे इस चार मिनिट के वीडियो में नगर परिषद के अधिकारियों और ठेकेदारों पर कई गंभीर आरोप लगाए थे.

उन्होंने बताया कि अधिकारी मनमानी कर रहे हैं. वे अपनी मर्जी से ऑफिस आते हैं और घटिया निर्माण करने वाले ठेकेदारों पर कोई कार्रवाई नहीं की जाती है. जिसके कारण अधिकारी और ठेकेदार निरंकुश हो चले हैं. इससे स्पष्ट है कि सिस्टम में कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है. साथ ही कहा था कि वे कभी भी आत्महत्या कर सकते हैं. उन्होंने यह भी बताया कि इसके लिए जो जिम्मेदार होंगे, उनके नाम उन्होंने अपने बच्चों को लिख कर दे दिए हैं. उल्लेखनीय कि जब से नगर परिषद का गठन हुआ है तब से लेकर आज तक नगर परिषद का कार्यकाल विवादों में ही रहा है. जहां इसके पहले पार्षदों ने भी अध्यक्ष के खिलाफ मोर्चा खोला था. उन्होंने कलेक्टर को आवेदन देकर अविश्वास प्रस्ताव की मांग की थी. वहीं नगर में विकास कार्यों को लेकर भी सवाल उठाये थे.

अशोक नगर में 15 पार्षद हैं जिनमें 11 भाजपा के और 4 कांग्रेस के है लेकिन नगर परिषद का संचालन सही तरीके से हो नहीं रहा है. इसके पीछे के कारणों को हल करना चाहिए ताकि लोगों का काम हो सके.

तहसीलदार क्यों कर रहे हैं विरोध

प्रदेश भर के तहसीलदार और नायब तहसीलदार ने जिला मुख्यालयों पर 21 जुलाई को प्रदर्शन करने की योजना बनाई है. बताया जा रहा है कि वे नई विभाजन योजना से आहत हैं. मध्य प्रदेश के कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा संघ के उपाध्यक्ष डॉ शैलेन्द्र शर्मा का तर्क है कि यह कार्य विभाजन बिना किसी अध्ययन और कानूनी संशोधन के जबरन लागू किया गया है जिससे व्यवहारिक समस्याएं उत्पन्न हो रही है. दरअसल राजस्व विभाग ने हाल ही में एक आदेश जारी कर तहसीलदारों और नायब तहसीलदारों को न्यायालयीन और गैर न्यायालयीन कार्यों में बांटने की योजना बनाई है. संघ का कहना है कि इस योजना से राजस्व न्यायालयों की संख्या घटेगी जिससे किसानों और आमजन को न्याय मिलने में देरी होगी. उनका यह भी आरोप है कि गृह विभाग की अनुमति के बिना राजस्व विभाग मजिस्ट्रेट की नियुक्ति कर रहा है, जो कानूनन गलत है. संघ का मानना है कि मानवीय और भौतिक संसाधनों की व्यवस्था किये बिना किसी तरह जिम्मेदारी नहीं दी जा सकती है. इसलिए राजस्व विभाग ने अगर इस तरह फरमान को वापस नहीं लिया तो संघ विरोध स्वरूप जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन करने से बाज नहीं आएगा.

भोपाल नगर निगम की कार्यशैली पर सवाल

पूरे देश में नगर निगम भोपाल को 10 लाख जनसंख्या वाले स्वच्छ शहरों में द्वितीय पुरस्कार मिलना हर्ष की बात है लेकिन हकीकत कुछ और है. शहर के तमाम हिस्सों में गंदगी की भरमार है. सड़कों पर गौर वंश का ऐसा जमावड़ा है कि आवागमन में लोगों को भारी परेशानी हो रही है लेकिन निगम प्रशासन को इसकी तनिक चिंता नहीं है. अनेकों गंदगी की भरमार है. शहर के लोग गंदगी और मच्छर के कारण बीमार हो रहे हैं. सड़कों पर अतिक्रमण से यातायात व्यवस्था चरमरा गई है. लोगों को जाम की समस्याओं से निजात कब मिलेगी यह कहना मुश्किल है.

उमर अब्दुल्ला से दुर्व्यवहार क्यों?

शहीद दिवस पर केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के साथ पुलिस की धक्का-मुक्की और उन्हें घर में नजरबंद करना अशोभनीय घटना थी. इसकी जिम्मेदारी उपराज्यपाल के कार्यालय की थी जिसे ध्यान रखना होगा कि आगे इस तरह का दुर्व्यवहार न हो. उमर अब्दुल्ला की राष्ट्रभक्ति पर सवाल नहीं उठाया जा सकता. जब 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था तो उन्होंने उसकी कड़े शब्दों में निंदा की थी और मारे गए 26 पर्यटकों के परिजनों के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की थी. इस घटना के बाद उन्होंने विधानसभा का एक दिन का विशेष सत्र बुलाया था और केंद्र द्वारा उठाए गए कदमों का पूर्ण समर्थन किया था. इस बार मुख्यमंत्री रहते हुए उमर अब्दुल्ला ने केंद्र सरकार और उसके प्रतिनिधि उपराज्यपाल से किसी भी तरह का टकराव या मतभेद टाला था. एक तरफ वह सहयोग की भूमिका व लचीलापन अपना रहे हैं वहीं दूसरी ओर उनके साथ सख्ती की जा रही है. क्या निर्वाचित मुख्यमंत्री के साथ ऐसा रवैया अपनाना चाहिए ? जम्मू-कश्मीर में शहीद दिवस का ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्व है. 1931 में डोगरा महाराजा हरिसिंह की पुलिस ने गोली चलाकर 22 लोगों की हत्या कर दी थी. तब शेख अब्दुल्ला, उनके उत्तराधिकारियों ने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए इस हत्याकांड को भुनाया. इस दिन छुट्टी रखी जाने लगी. 2019 में संविधान का अनुच्छेद 370 व धारा 35 ए समाप्त किए जाने के बाद जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने शहीद दिवस की छुट्टी देना बंद कर दिया. शहीद स्थल पर मुख्यमंत्री का जाना राजनीतिक माना गया और प्रशासन को ऐसा लगा मानो उमर अब्दुल्ला केंद्र और एलजी से दूरी बढ़ा रहे हैं. इसलिए उन्हें नौहट्टा क्षेत्र में शहीदों के कब्रस्तान में जाने से रोकने का प्रयास किया गया. फिर भी उमर अब्दुल्ला अपने समर्थकों के साथ पैदल ही कब्रिस्तान पहुंचे और सुरक्षा दीवार फांदकर अंदर चले गए. उन्होंने शहीदों की कब्र पर फातिहा पढ़कर श्रद्धांजलि दी. उमर अब्दुल्ला ने बीजेपी पर कश्मीरी लोगों की आवाज दबाने और बेहद क्रूर कार्रवाई का आरोप लगाया और कहा कि यदि हमें चुपचाप नमाज पढ़ने के लिए जाने देते तो यह मुद्दा ही नहीं होता. बीजेपी यह दिखाने की कोशिश कर रही है कि कश्मीर के लोग शक्तिहीन हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

भारतीय राजनीति का कड़वा सच नेता के मुंह में सोने का चम्मच

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, प्रधानमंत्री मोदी राजनीति में वंशवाद की कितनी ही आलोचना करें लेकिन यह अनुवांशिक नेतागिरी की अमरबेल हमेशा हर क्षेत्र में पनपती है और आगे भी पनपती रहेगी.

हमने कहा, मुद्दे की बात है कि शिवसेना (उबाठा) के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने कहा कि मैं अपने पिता और दादा के सत्कर्म की वजह से सोने का चम्मच लेकर पैदा हुआ. जिन्होंने एकनाथ शिंदे को सोने की चम्मच से खाना खिलाया, उन्हीं के साथ उन्होंने विश्वासघात किया. इस तरह उद्धव ने अपने पिता व शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे तथा दादा केशव (प्रबोधनकार) ठाकरे का पुण्यस्मरण किया.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, उद्धव ने सोने के चम्मच का जिक्र किया लेकिन अंग्रेजी में कहावत है- बॉर्न विद सिल्वर स्पून इन दि माउथ. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बारे में लिखा जाता था कि वह मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुए थे. उनके पिता मोतीलाल नेहरू ने उन्हें सिर्फ 9 वर्ष की आयु में पढ़ने के लिए लंदन भेज दिया था जहां वे हैरो स्कूल में पढ़े और फिर कैर्मन्ब्रज यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर बीएससी और बैरिस्टर की डिग्री हासिल की थी. जवाहरलाल 25 वर्ष की आयु में भारत लौटे थे.

हमने कहा, नेहरू की जीवनी बीजेपीवालों को पसंद नहीं आएगी इसलिए सिर्फ चांदी के चम्मच की बात करें. इस समय चांदी का भाव 1,12,200 रुपए प्रति किलोग्राम है. चांदी की पाजेब, बिछिया महिलाएं पहनती हैं. छत्तीसगढ़ में महिलाएं पैर में चांदी के मोटे कड़े पहनती रही हैं. महारानी विक्टोरिया के जमाने में रुपए का सिक्का प्योर चांदी का रहा करता था. अब भी अमेरिका में डॉलर, हाफ डालर और क्वार्टर के सिक्के चांदी के हुआ करते हैं. लोग चांदी का वर्क चढ़ी हुई मिठाई या काजू कतली खाते हैं लेकिन वह असल में एल्युमिनियम का फॉइल रहता है. कुछ आयुर्वेदिक दवाइयों में सोने-चांदी की भस्म का इस्तेमाल किया जाता है. सोना और चांदी फैलने वाली धातु हैं जिन्हें अंग्रेजी में मैलेबल मेटल्स कहा जाता है. उन्हें देर तक कूट-कूट कर वर्क बनाया जाता है. आजादी के आंदोलन के दौरान लोग महात्मा गांधी की झोली में चवन्नी का सिक्का डालकर कांग्रेस के सदस्य बन जाते थे. किसान की कमाई 4 आना प्रतिदिन थी. तब उत्तर भारत में एक लोकगीत चल पड़ा था- %गंगा किनारे का मैं हूं किसनवा, खेतों में काम करूं सारे-सारे दिनवा, पाऊं चवन्नी चांदी की, जय बोलो महात्मा गांधी की. चमचे आज भी बहुत हैं जो नेताओं के आसपास घूमा करते हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11967

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		■	4	5	6
7			■	8			
	■	9	10			■	
■	11			■	■	12	■
13		■	14	15	16		■
17		18	■	19			20
	■	21			■	■	
	■		■	22			

बाएं से दाएं

1. चपल, चंचल 4. आलस्य, आलसी 7. रिआया, प्रजा 8. केवल नाम के लिए (सं.) 9. वस्तु-शरीर आदि की गर्मी तथा सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है 11. रूप या अस्तित्व देना, रचना, ठीक अवस्था में लाना, मूर्ख ठहराना 13. बिल्ली की जाति का एक हिंसक पशु 14. हक या अधिकार रखने वाला (उर्दू) 17. गूंथे हुए आटे का सड़ाव 19. एक फल 21. उत्पात, उपद्रव, शोरगुल 22. वह वन जो तपस्वियों के रहने अथवा तपस्या करने के योग्य हो

ऊपर से नीचे

1. चिड़िया, चीरने वाला 2. ध्यान में लीन होना, धुन 3. बिलखना, व्याकुल होना, सताना 4. साल भर में एक ही फसल उत्पन्न करने वाली भूमि 5. लक्ष्मी, पत्नी (सं.) 6. मृत्यु के बाद सत्रहवें दिन किया जाने वाला कृत्य 8. पत्र, खत (उर्दू) 10. शरण, त्राण, बचाव (उर्दू) 11. ब्रम्हदेश संबंधी, ब्रम्हदेश का निवासी, ब्रम्हदेश की भाषा 12. अक्षर, वर्ण (उर्दू) 13. एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति, व्यर्थ बड़े मंसूबे बांधने वाला, मूर्ख 15. चमत्कार, करिश्मा (उर्दू) 16. मूल्य, कीमत 18. कुएं से पानी निकालने की एक कल 20. किसी कार्य या व्यक्ति की ओर पूर्णतया

Solution 11966

ना	गा	र्जु	न	■	सं	प्र	ति
गे	य	■	के	त	की	■	ल
श	■	शी	ल	■	र्ण	■	क
■	वं	श	■	वि	ता	न	■
आ	च	म	न	■	■	व	क्र
च	ना	■	थ	का	न	■	य
र	■	क्षो	■	मि	ल	न	■
ण	■	भ	वा	नी	■	फा	नी

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्राओं में धन व्यय होगा, मानसिक उलझन रहेगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा, सामाजिक कार्यो में ख्याति मिलेगी, वर्ष केअन्त में व्यर्थ की भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का यात्राओं में धन व्यय होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का व्यक्तित्व सुखमय निखरेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वाभाव मिलनसार और सामंजस्यपूर्ण रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन साधारण और आनन्दमय रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वान होगा, इनके कार्य एक से अधिक होते हैं, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, यात्राप्रिय एवं लेखनादि में अधिक रूचि रखने वाला होगा.

मेष- सहयोगी आपके व्यवहार से अपमाति महसूस कर सकते है, धार्मिक कार्यों में मानसिक संतोष बना रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, उत्साह एवं लगन रहेगी.

वृषभ- मनमौजी रवैया नुकसानदायी हो सकता है, परिचितों से नुकसान हो सकता है, शारीरिक अस्वस्थ्यता एवं मानसिक पीड़ा हो सकती है. सुख साधनों में वृद्धि होगी.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, सुविधा के अभाव से परेशानी होगी, पारिवारिक क्लेश एवं विवाद से दूर रहें. अनावश्यक तनाव से बचें.

कर्क- भौतिक सुख सुविधा पर बड़े खर्च की संभावना है, अपनी ताकत व पहुंच का सही लाभ लेने में नाकाम रहेंगे, न्यायालयीन प्रयासों में सफलता मिलेगी.

सिंह- विपरीत हालात में समझौता करना लाभकारी हैं, लेखन अध्ययन, एवं नवीन कार्यों की योजनाओं पर विचार होगा, जवाबदारी के कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- व्यर्थ की कार्यों में समय बीतेगा, पुराने विवाद के समाधान के आसार हैं, भूमि भवन वाहनादि के कार्यों में सावधानी रखें, प्रतियोगिता के परिणाम उत्तम रहेंगें.

तुला- लेन देन के मामले आपका पक्ष मजबूत होगा, कर्जदारी से छुटकारा मिल सकता है, इच्छानुसार सफलता प्राप्त होने का योग है. विवादास्पद कार्य सफल होंगे.

वृश्चिक- जोखिम के कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक मामलों में अपनों की मदद से लाभ होगा, मित्रों का सामान्य सुख मिलेगा, अधूरे कार्यों के पूर्ण होने का योग है.

धनु- अनुशासन की कमी से काम का बोझ बढ़ेगा, केरिअर में अच्छी प्रस्ताव मिलेंगे, शारीरिक श्रम एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी, अतिथि आगमन हो सकता है.

मकर- कार्य विस्तार की संभावना बन सकती है, सामाजिक जीवन में आपकी भूमिका की सभी प्रशंसा करेंगे. दैनिक नियमितता का ध्यान रखें.

कुम्भ- आपकी भूमिका की सभी प्रशंसाा करेंगे, युवाओं के कैरिअर में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, स्थायी प्रयासों में लाभ होगा, मांगलिक कार्यो में खर्च होगा.

मीन- तयशुदा कार्यक्रम में बदलाव से खिन्नता बढ़ेगी, वैभव के सामान पर विशेष खर्च की संभावना है. आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

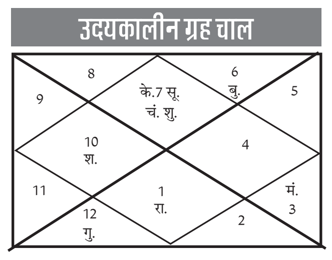

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 श्रावण कृष्ण नवमीं शनिवासरे दिन 12/58, भरणी नक्षत्रे रात 11/51, शूल योगे रात 12/58, गर करणे सू.उ. 5/18 सू.अ. 6/42, चन्द्रचार मेष, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण नवमीं को भरणी नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, तिलहन, तेल, अलसी, सरसों में अच्छी मंदी होगी, रूई, चांदी के भाव में तेजी का योग है. आज 10 बजकर 30 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 1925 है.

SUDOKU 7099

		8			4			
1								9
3				2			5	
			1				8	
		5				4		
	7				9			
	6			3				2
9								1
			8			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7098

6	3	8	5	2	1	4	7	9
7	9	1	4	6	3	5	8	2
2	4	5	7	9	8	6	3	1
9	1	3	2	5	4	8	6	7
4	6	2	8	1	7	9	5	3
5	8	7	6	3	9	1	2	4
3	2	4	1	8	5	7	9	6
8	7	6	9	4	2	3	1	5
1	5	9	3	7	6	2	4	8